शोध-सार (ABSTRACT)

नमस्तेऽस्तु गते पुण्ये ययाहं वाद्यनिपुणा।

प्रदेहि गतय: सर्वा: षोडश: बुधसंस्मृता:।।

वादयामि ध्वनिं नित्यं त्वत्प्रसादात् नित्यश:।

प्राकृतिक: सदावतु नाप्राकृतिकं मे वादनम्।।

संगीत का इतिहास मानव के इतिहास जितना ही प्राचीन है। युद्ध हो या प्रार्थना, संगीत का उपयोग अध्याहृत है। संगीत एक ऐसी कला है, जिसमें गायन, वादन, नृत्य अन्तर्भूत है एवं जिसके द्वारा मानवी भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। भारतीय संगीत में मुख्य दो पद्धतियाँ प्रचलित है - उत्तर भारतीय संगीत पद्धति एवं दक्षिण भारतीय संगीत पद्धति। उत्तर भारतीय संगीत पर दृष्टिपात करें तो इस अभिजात संगीत की वादन विधा के अन्तर्गत अवनद्ध वाद्यों में सर्वाधिक प्रचलित एवं लोकप्रिय ताल वाद्य तबला है। शोधकर्ती का विषय तबला वाद्य से ही जुड़ा है। इस विषय पर सखोल अध्ययन करने के पहले शोधकर्ती ने तबला वाद्य से जुड़ी घटनाएँ, परम्पराएँ एवं विकास का कालक्रम के अनुसार वर्णन करना उचित समझा, ताकि शोधप्रबंध का विषय अधिक सार्थक और सुसंबद्ध हो सके।

तबला वाद्य का इतिहास, उद्‌गम, विकास के बारे में विद्वानों में मतभेद है। तबला वाद्य के संदर्भ में अनेक मत एवं किंवदन्तियाँ प्रचलित हैं। इनमें उल्लेखित दो प्रमुख विचारधाराओं में एक यह है कि तबला मूलत: भारतीय वाद्य है और दूसरी है कि तबला विदेशी अवधारणा है। उपरोक्त विषय के परिप्रेक्ष्य में यह कहा जा सकता है कि शिव का डमरू, वेदकालीन भूमिदुंदुभि, स्वाति मुनि से निर्मित त्रिपुष्कर, पखावज़, महाराष्ट्र का सम्बल एवं पंजाब का दुक्कड ये सारे वाद्य तबला वाद्य की उत्प्रेरणा है। इसका कारण यह है कि भारतीय संस्कृति में सर्जित तालवाद्यों में ही स्याही के प्रयोग का उल्लेख पाया गया है। विदेशी संस्कृति में किसी तालवाद्य पर स्याही के लेपन का उल्लेख नहीं मिलता। पंद्रहवीं शती के पूर्व ख्याल गायकी के साथी वाद्य के रूप में तबले का जन्म माना गया है। इस

हिसाब से उ. सिद्धारखा ढाढी के ढाई सौ वर्ष पूर्व तबला अभिजात संगीत में था, इसलिए उ. सिद्धारखा ढाढी को तबले का जनक मानना पूर्णत: निराधार है। संक्षेप में, तबले की उत्पत्ति कब, कहाँ, कैसे हुई एवं तबले के अन्वेषक कौन थे, इनके बारे में तर्क के आधार पर ही अनुमान निकालना पड़ता है। इस सन्दर्भ में कोई प्रामाणिक जानकारी या ठोस विधान नहीं मिलता। इन तथ्यों को शोधप्रबंध में प्रस्तुत किया गया है।

तबला वाद्य की विशिष्ट बनावट इस वाद्य के विकास में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है, जिसके कारण 'तबला' सुयोग्य साथी वाद्य के रूप में प्रस्थापित हुआ, लेकिन तबले की वैश्विक अभिवृद्धि का सिर्फ यही कारण नहीं था। तबले की अतीव सूक्ष्मता से रचाई गई भाषा तथा इस भाषा का लहेजा ही वादकों की हस्तकुशलता का सहारा बना। गुजरते समय के बहाव में यही भाषा स्वतंत्र रूप में विकसित हुई जिसकी वजह से खुले-बंद बाज से निर्मित विभिन्न घराने एवं वादनशैलियों के माध्यम से स्वतंत्र वादन के क्षेत्र में भी 'तबला' वाद्य को उन्नत अवस्था प्राप्त हुई। वर्ण या पटाक्षरों से निर्मित इस समृद्ध वादन सामग्री से पेशकार, कायदा, रेला आदि विस्तारक्षम रचनाएँ एवं गत, टुकड़े, चक्रदार, परन आदि पूर्वसंकल्पित बंदिशों की रचनाएँ हुईं। हर एक बंदिशों में प्रयुक्त विशिष्ट भाषा, खाली-भरी एवं निहित सौंदर्य इन पर चिंतन करके शोधकर्ती ने अपने शोधकार्य के लिए 'गत' विषय का चयन किया, क्योंकि गत तबले का सर्वांगसुंदर काव्य है और सभी प्रकार की बंदिशों में प्रयुक्त भाषा का प्रयोग गतों में किया जा सकता है।

व्यवहारिक भाषा में गत यह एक विशेषण है किन्तु तबले की भाषा के अनुसार गत एक संज्ञा है। इस संज्ञा के विश्लेषण पर यदि गौर किया जाए तो हमें यह अनुभूति होती है कि सिर्फ शास्त्रीय विश्लेषण के आधार पर या केवल सौंदर्यतत्त्वों की सहायता से गत की परिभाषा बूनना असम्भव है। गत का मूलभूत तत्त्व तबले की भाषा के इस सर्वांगसुंदर काव्य के एहसास में है। इसलिए क्रमश: प्रस्तुतिकरण में विस्तारक्षम रचनाओं के बाद बजायी जानेवाली गत रचना का स्वतंत्र तबला वादन में स्थान, महत्त्व एवं गत के विभिन्न प्रकारों पर शास्त्रीय विवेचन करना, साथ ही साथ गत शब्द के

विविध अर्थों से जुड़ा हुआ गत रचना का सम्बन्ध, उसकी विभिन्न विशेषताएँ और उसके अनुसार गत के विभिन्न प्रकार, इनका सौंदर्यात्मक विवेचन देना शोधकर्ती को अनिवार्य महसूस हुआ।

टुकड़ा, परन, गतकायदा इन बाकी विस्तारक्षम एवं पूर्वसंकल्पित रचनाओं की तुलना में गत भिन्न है। यह भी देखा गया कि परम्परागत गतों की निर्मिति अधिकतर तीनताल में ही हुई है। प्रतिभासंपन्न तबलावादकों के साथ की हुई बातचीत में शोधकर्ती के उपरोक्त विधानों को पुष्टि मिली। सभी घरानों में गतें बजायी जाती हैं, परन्तु बंद बाज की तुलना में खुले बाज के घरानों में गतों का प्रचलन अधिक है। हर एक घराने में सामान्यत: वर्ण, पटाक्षर समान होते हुए भी निकास विधि एवं हाथ के रखाव के अनुसार बंदिशों में भिन्नता दृष्टिगत होती है, अर्थात् हर एक घराने की प्रचलित बंदिशों का अपना पृथक् अस्तित्व होता है। इन तथ्यों पर विचार-विमर्श कर समाधान ढूँढ निकालने का निष्ठापूर्वक प्रयास शोधकर्ती द्वारा किया गया है। विभिन्न वादन विधियाँ, वादन शैलियाँ, रचनाकार, विविध रचनाएँ एवं उनके प्रकार तथा ताल सम्बन्धी अनेक बातों पर इस शोधप्रबंध में दृष्टिपात किया है, जिससे ठोस और अधिकाधिक जानकारी प्रकाश में आ सके।

'स्वतंत्र तबलावादन में गत एवं उनके प्रकारों का सौंदर्यात्मक विवेचन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन' इस विषय पर प्रस्तुत किए हुए अपने शोधप्रबंध में शोधकर्ती द्वारा विभिन्न घरानों की वादन पद्धति एवं विशेषताओं के अनुसार विभिन्न घरानों की गतों का सोदाहरण विवेचन दिया गया है। इस शोधप्रबंध में प्रयुक्त सभी रचनाओं को पं. भातखंडे ताललिपी में लिपीबद्ध किया गया है।

तबले की 'गत' इस अभूतपूर्व रचना को समझने के लिए तबला वाद्य को समझना आवश्यक है और तबला वाद्य को समझने के लिए तबलावादकों, रचनाकारों को समझना भी आवश्यक है। इसी कारण गतों की निर्मिति में जिन बुजुर्ग प्रतिभावान रचनाकारों का अमूल्य योगदान है, ऐसे कलाकारों की जीवनी के साथ इन बुजुर्गों द्वारा रचायी अथवा बजायी गईं गतों को प्रस्तुत किया है। इन बुजुर्गों की समृद्ध परम्परा की पुष्टि इस शोधग्रंथ के अंत में तबले के छ: घरानों के परिशिष्ट के द्वारा उद्घाटित की गई है।

इस शोध प्रबंध में विविध लेखकों द्वारा लिखी हुई पुस्तकों एवं विविध विद्वानों के साथ हुए साक्षात्कार से प्राप्त रचनाएँ और जानकारी का संदर्भ पादटिप्पणी के रूप में दिया गया है, साथ ही साथ शोधकर्ती ने अपने खुद के विचारों का कथन भी किया है। इनके द्वारा जो निष्कर्ष सामने आए हैं, उन्हें ही इस शोधप्रबंध में उज़ागर करने का प्रयास किया है।

यह शोधप्रबंध 'गत' इस सर्वांगसुंदर काव्यरचना को समझने की एक विनम्र कोशिश है और इसमें काव्य का आनंद लेना और बाँटना यही शोधकर्ती का प्रयोजन है, ताकि इस शोधप्रबंध से विद्यार्थी, शोधार्थी तथा सभी संगीत प्रेमीजन लाभान्वित हो सकें।